श्रीधन्वन्तरये नमः

वैद्यसम्मेलन-पत्रिका

निखिलभारतवर्षीयवैद्यसम्मेलनकी

द्वैमासिकी मुखपत्रिका

द्वितीय वर्ष } आषाढ़-श्रावण १९७२ वै० { पञ्चम संख्या

वार्षिक मूल्य २)

सभासदोंको मुफ़

विषय सूची।

श्रीकिशोरीदत्त शास्त्री,
जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। } सम्पादक।

प्रदर्शिनीके नियम ।

१—नि० भा० वैद्यसम्मेलनके साथ जो पूनेमें आयुर्वैदिक प्रदर्शिनी होगी वह १४ दिसम्बरसे १४ जनवरी तक खुली रहेगी ।

२—आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें वर्णित वनस्पति, औषधि, यन्त्रशास्त्र, खनिज-प्राणिज औषधि, मुद्रित और हस्तलिखित ग्रन्थ तथा आयुर्वेदोपयोगी सम्पूर्ण वस्तुओंका प्रदर्शन कर इस बातका उद्योग करना जिसमें आयुर्वेदीय शास्त्रके अभ्यासमें लोगोंमें अभिरुचि उत्पन्न हो, आयुर्वेदीय-चिकित्सापद्धति अधिक लोक-प्रिय हो, आयुर्वेदीय पदार्थों और वनस्पतियोंका निर्णय हो, भारतवर्षीय लोगोंके मनमें वैद्यशास्त्रके विषयमें आदर, अनुराग और अभिमान उत्पन्न हो, यही प्रदर्शिनीका उद्देश्य है ।

३—इस प्रदर्शिनीमें गीली और सूखी वनस्पति, क्षुप, क्षुद्र क्षुप, वल्ली, वल्लरी, औषध, धातु, खनिज द्रव्य, रसायनशास्त्रीय द्रव्य, प्राणिज द्रव्य और उनसे तैयार हुई किसी रोगकी औषधि, शास्त्रोक्त औषधि, यन्त्रशस्त्र, शारीर और इन्द्रिय-विज्ञान-सम्बन्धी नकशे, प्राचीन वस्तुओंकी ढूंढ़ खोजमें मिली हुई आयुर्वेद-सम्बन्धी प्राचीन वस्तु, मुद्रित-अमुद्रित आयुर्वेदीय ग्रन्थ आदि आयुर्वेद-विषयक सभी वस्तुओंका समावेश किया जायगा । प्रदर्शिनीमें नौ विभाग होंगे । (अ) सब तरहकी वनस्पति लता, पत्र, पुष्प, फल, गोंद आदि (आ) शुद्ध अशुद्ध खनिज और रासायनिक द्रव्य, (इ) कस्तूरी, गोरोचन, पित्त-पञ्चक, प्रवाल, मोती आदि प्राणिज द्रव्य (ई) शास्त्रोक्त औषधि, जिसके पहले भागमें आसव, अरिष्ट, लेह, घृत, तैल, आवर्तित तैल, आवर्तित घृत, मोदक, गुटिका, सत्व, काढ़े आदि और दूसरे भागमें भस्म, वङ्ग, पारद तथा चन्द्रोदय, मकरध्वज, स्वच्छन्द भैरव आदि रसौषधि रहेंगी । स्मरण रहे जिन औषधियोंका पाठ नहीं बताया जायगा वे पारितोषिकवाली श्रेणीमें परिगणित नहीं होंगी (उ) सिंहमुख कंकमुख आदि यन्त्रशस्त्र और डमरू, मूषा, कोष्ठी आदि उपकरण यन्त्र (ऊ) शारीर और इन्द्रिय-विज्ञान-सम्बन्धी वस्तु, नकशे, अस्थिपंजर तथा मोम और मिट्टीके अवयव आदि (ऋ) ताम्रपत्र, शिलालेख, ताड़पत्र आदि पर मिले हुए प्राचीन आयुर्वेदिक-प्रमाण-संग्रह (ॠ) मुद्रित-अमुद्रित और दुर्मिल नये पुराने ग्रन्थ (ऌ) आयुर्वेदीय-चिकित्सा-पद्धति-विषयक अन्य सब वस्तुएं ।

(शेष टाइटिलके ३, ४थे पृष्ठमें)

॥ श्रीधन्वन्तरयेनमः ॥
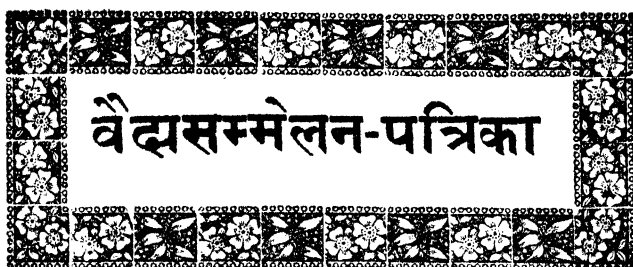
निखिलभारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनकी स्थायीसमिति
और आयुर्वेदविद्यापीठकी ओरसे प्रकाशित।

द्वितीय वर्ष } आषाढ़-श्रावण सं० १९७३ वै० { पञ्चम संख्या

अष्टम वैद्यसम्मेलन।

पूना निवासी हमारे वैद्य-बन्धुओंने स्वागतकारिणी-समिति बनानेमें जैसी तत्परता दिखायी है, उसी प्रकार वे उसका काम भी शीघ्रता पूर्वक कर रहे हैं। जिस ढङ्गसे कार्य होनेकी हमें सूचना मिल रही है, उससे हमें प्रतीत हो रहा है कि महाराष्ट्र प्रान्तका यह वैद्य-सम्मेलन बहुत ही महत्वपूर्ण होगा। जब उधर पूर्ण उत्साह और परिश्रमसे काम हो रहा है, तब बाहरवाले वैद्योंका यही कर्तव्य है कि स्वागतकारिणीका प्रदर्शिनी सम्बन्धी उद्देश्य सफल किया जाय। स्वागतकारिणीकी अभीष्ट औषधियां स्थान स्थानसे वहाँ पहुंचायी जायँ। अच्छे अच्छे विषयों पर (जिन विषयोंके वह मँगाना चाहे) उत्तम निबन्ध लिख कर पहुंचाये जायँ। यही नहीं, सबसे बढ़कर बात यह होनी चाहिये कि समग्रभारतके सैकड़ों वैद्यराजोंकी संख्या

वहां पहुंचे; जिससे पूनावासी अपना परिश्रम और अपना उत्साह सार्थक समझें। स्मरण रखना चाहिये कि महाराष्ट्र-प्रान्त भारतके अन्य कई भागोंके समान मुर्दा नहीं; बल्कि विचार-जागृतिमें वह ज्वलन्त-आदर्श और सजीव प्रान्त है। महाराष्ट्र-प्रान्तकी प्रादेशिक, राजनैतिक-समितिमें लगभग ढाई हज़ार प्रतिनिधि इकट्ठे हुए थे, फिर उसी महाराष्ट्र-प्रान्तमें यदि समस्त भारतके वैद्योंमेंसे दो हज़ार प्रतिनिधि भी वैद्यसम्मेलनमें न पहुंचे तो पूनावासियोंको कैसे सन्तोष होगा? इसलिये वैद्य-मण्डलीसे हमारा अभीसे अनुरोध है कि और वर्षोंके समान उन्हें आलस्य न कर सम्मेलनके समय पूना पहुंचनेका अवश्य उद्योग करना चाहिये।

स्वागतकारिणी समिति चाहती है कि २२से २५ दिसम्बर तक अर्थात् पौष कृष्ण १३ शुक्रवारसे ४ दिनों तक सम्मेलनके उत्सव किये जावें। हमारी समझमें यह समय उचित है। सम्पूर्ण महाराष्ट्र-प्रान्तमें इस समय वैद्यसम्मेलनके लिये उत्साह प्रकाशित किया जा रहा है। सम्मेलन-सम्बन्धी आन्दोलन वहां धड़ाकेसे हो रहा है। प्रति सप्ताह 'वैद्यक-पत्रिका' द्वारा लोगोंको सम्मेलनके समाचार दिये जाते हैं। अन्य प्रान्तोंमें जब सम्मेलन हुए हैं, तब उसके लिये किसी विशेष पत्रकी योजना नहीं की गयी थी और न स्थायी-समितिकी इच्छा रहने पर भी स्वागतकारिणी सभाओंने इस बातका उद्योग ही किया कि समाचार-पत्रोंमें सम्मेलन-सम्बन्धी आन्दोलन किया जाय। देखते हैं महाराष्ट्र-प्रान्तने इस आवश्यकताको अच्छी तरह समझ लिया है, इसलिये उसकी सफलतामें हमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

पूनेकी स्वागतकारिणी सभा अकर्मण्य नहीं है। जो काम उसे करने हैं, उनके विचारके लिये प्रतिमङ्गलवारको वैद्यकमण्डलके स्थानमें उसकी कमिटी हुआ करती है। यदि किसी विशेष कार्यके लिये कमिटी करनी होती है तो उसके लिये विशेषरूपसे सभासदोंको सूचना दी जाती है। सम्मेलन-कार्यके लिये आवश्यक द्रव्य-संग्रह करनेके लिये एक अलग उपसमिति बनायी गयी है और महाराष्ट्र-प्रान्तके भिन्न भिन्न स्थानोंके वैद्योंको स्वागतकारिणीके सभासद होनेकी प्रार्थनाकी जा रही है।

स्वागतकारिणी सभाके कुछ सदस्योंकी सम्मति है कि अब तक सात सम्मेलन हुए हैं; परन्तु स्थायी-कार्य अब तक कुछ नहीं हुआ। इसलिये उनकी इच्छा है कि इस वर्षका सम्मेलन कुछ महत्वके विषय हाथमें ले। वे चाहते हैं कि आयुर्वेदकी शिक्षा देनेके लिये कमसे कम एक आदर्श आयुर्वेद-महाविद्यालय स्थापित करनेका कार्यतः उद्योग किया जाय। महाराष्ट्र-बन्धुओंको यह बात बहुत अखर रही है कि अन्य विषयोंमें तो भारतवर्षके पैर आगे बढ़ रहे हैं; परन्तु आयुर्वेदके विषयमें अभी सन्तोषजनक स्थिति नहीं कही जा सकती। सम्मेलनकी यह इच्छा है कि यदि मेरे द्वारा और कुछ काम न हो सके, केवल विद्यालयका ही काम हो, तौभी समझा जायगा कि चिरस्थायी कार्य हो गया। उसकी सम्मति है कि अब तक वैद्योने आलस्यसे बैठकर अपनी बड़ी हानि कर ली है; अब हमें सँभल कर देखना चाहिये कि संसारमें क्या क्या नवीन आविष्कार हो रहे हैं और उनका हमारे शास्त्र पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। आयुर्वेद पर नासमझीसे जो आक्षेप हो रहे हैं, अपनी कृतिसे उनका निवारण करना चाहिये। इसीलिये लोगोंमें कृतिका उत्साह उकसानेके लिये महाराष्ट्र-प्रान्तका सम्मेलन अपूर्व करना आवश्यक है। स्वागतकारिणी घोषणा कर रही है कि महाराष्ट्रोंके कृतित्व पर किसीको सन्देह नहीं है, इसलिये इस समय महाराष्ट्र-वैद्यों पर जो जवाबदारी आ गयी है, उसे पूर्ण करना ही चाहिये। जिनके ऐसे विचार हैं उनके कार्य सिद्ध होंगे ही।

सम्मेलनके सभापति

यह बात निर्विवाद है कि किसी भी सम्मेलन अथवा सभाकी सफलताका बहुत कुछ दारमदार उसके सभापतिकी योग्यता पर निर्भर रहता है। इसलिये पूनेकी स्वागतकारिणी सभा बड़े ही विवेकके साथ इस विषयका विचार कर रही है कि आठवें वैद्य-सम्मेलनके सभापति कौन सज्जन हों। महाराष्ट्र-प्रान्तके पत्रोंमें इस विषयमें कई नामोंको लेकर विचार किया गया है: किन्तु नियमानुसार चुनावके पहले हम सार्वजनिक रूपसे किसी नामकी चर्चा नहीं कर सकते। तथापि सभापतिके चुनावके सम्बन्धमें लोगोंकी

जो कई प्रकारकी सम्मति है वह विचार योग्य है। कुछ लोग कहते हैं कि सम्मेलनको जो काम करने हैं, उनमें देशके भूमिपतियों और श्रीमानोंकी सहानुभूति रहना आवश्यक है: अतएव यदि कोई देशी राजा सभापति हों तो राजा महाराजाओं पर सम्मेलनका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। इसपर स्वागतकारिणीकी सम्मति है कि यदि कोई संस्कृतका विद्वान और आयुर्वेदका उत्कट प्रेमी नरेश मिलें तो उन्हें सभापति बनाना उत्तम होगा। कुछ लोगोंकी सम्मति है कि अभी तक जिन प्रान्तोंके सज्जन सभापति नहीं हुए, उन प्रान्तोंमेंसे किसी एक प्रान्तके सज्जन सभापति बनाये जाँय। जो-हो, महाराष्ट्र-प्रान्तमें वैद्य और डाकृरोंका प्रश्न बहुत जोरों पर है, इसलिये वहां ऐसा ही सभापति होना चाहिये जिसकी छाप सब पर एक सी पड़ सके। स्वागतकारिणीके पत्रोंसे मालूम पड़ता है कि इस वर्ष सम्मेलनमें कई विवाद-पूर्ण शास्त्रीय विषयों पर विचार और शास्त्रार्थ होगा। कितनी ही भ्रम-पूर्ण औषधियोंका निर्णय किया जायगा। डाकृर लोग "त्रिदोष-पद्धति" की दिल्लगी उड़ाते हैं, इसलिये स्वागतकारिणी इस बातका प्रयत्न कर रही है कि महामहोपाध्याय कविराज गणनाथ सेन सरस्वती महोदय इसकी सत्यता और वैज्ञानिकता आकर सिद्ध करें। इसके सिवाय और भी कई शास्त्रीय विषयों पर वाद-विवाद होगा, उत्तम कोटिके अनुभूत-प्रयोगोंके लिये स्वतन्त्र सुविधा की जायगी। भिन्न भिन्न विषयोंके विद्वान वैद्य प्रयत्न कर बुलाये जावेंगे, इसलिये सभापति ऐसा होना चाहिये जो विद्वन्मण्डली-मण्डन हो। इसके सिवाय पूनेके सम्मेलनमें आयुर्वेद-विद्यालयकी चर्चा जोरशोरसे छिड़ेगी, इसलिये सभापति ऐसा हो जो देशकी सभी श्रेणीके मनुष्योंपर प्रभाव डाल सकता हो। स्थायीसमितिकी ओरसे सब बातोंका विचार कर सात नाम भेजे जावेंगे; स्वागतकारिणी अपनी सुविधाके अनुसार उनमेंसे किसी एकको सभापति निश्चय कर लेगी।

निबन्ध

सम्मेलनका एक मुख्य अंग निबन्धवाचन भी है। सामयिक व्याख्यान तो लोग सुन लेते हैं और उसी समय वाहवाही कर भूल

जाते हैं; परन्तु निबन्धोंके द्वारा भिन्न भिन्न विषयोंके विद्वानोंके जो विचार प्रकट होते हैं वे पुस्तकाकार प्रसिद्ध हो जानेसे उस विषयके वे स्थायी-साहित्य होते हैं और ऐतिहासिक साहित्यकी मालिकामें स्थान पा सकते हैं। यद्यपि पिछली दो एक स्वागतकारिणियोंकी अयोग्यताके कारण सम्मेलनके निबन्ध सर्वसाधारणको देखनेके लिये नहीं मिले और इससे इस विषयमें परिश्रम करनेवालोंको बहुत निराशा हुई; परन्तु अब स्थायी-समितिकी घोषणा है कि जो स्वागतकारिणी आगत निबन्ध प्रकाशित न कर सके वह स्थायी-समितिके पास उन्हें भेज दे, वह प्रकाशित करेगी। ऐसी स्थितिमें आशा है विद्वान लेखक उत्तम निबन्धों द्वारा भी सम्मेलनकी यथेष्ट सहायता करेंगे। स्वागतकारिणी थोड़ी ही संख्यामें निबन्ध मँगाना चाहती है, उनमें जो पारितोषिक-योग्य होंगे वे सम्मेलनमें पढ़े जावेंगे। स्थायी-समितिने बीस निबन्धोंकी एक तालिका स्वागतकारिणीके पास भेजी है और सूचना दी है कि स्वागतकारिणी चाहे तो उतने ही निबन्धोंके छापनेका व्यय स्वीकार करे जो सम्मेलनमें पढ़े जावें। अन्य उत्तम निबन्धोंको स्थायीसमिति प्रकाशित कर लेगी।

प्रदर्शिनी

वैद्यसम्मेलनका सबसे अधिक उपयोगी भाग आयुर्वैदिक-प्रदर्शिनी है; परन्तु अबतक प्रदर्शिनियोंमें जितना परिश्रम और व्यय हुआ है उसे देखते हुए उनसे लाभ बहुत कम हुआ है। पूनाकी स्वागतकारिणी सभा चाहती है कि हमारे यहाँकी प्रदर्शिनी ऐसी हो; जिससे लोगों को यथार्थ लाभ पहुंचे। इसलिये वह उद्योग कर रही है कि प्रदर्शिनीमें कमसे कम दो सौ वनस्पतियां गमलोंमें लगाकर रखी जावें। महाराष्ट्र-प्रान्तमें स्वागतकारिणी लिखा पढ़ी कर रही है। शेष देशोंके निवासियोंसे हमारा अनुरोध है कि अपने आसपासकी जिन वनस्पतियोंका वे निर्णय कराना चाहते हों उन्हें गमलोंमें लगाकर वहां भेज दें और यह भी लिख भेजें कि आपके यहां उन्हें क्या कहते हैं और उनका उपयोग किस रोगमें किस प्रकार करते हैं। बम्बई प्रान्तकी पहाड़ियोंसे वनस्पतियोंका मँगाना

आरम्भ हो गया है। प्रदर्शिनीके लिये नदी किनारे एक बगीचा स्वागतकारिणीने अपने अधिकारमें कर लिया है। अन्य स्थानोंमें भी जो उपयुक्त वनौषधियां हों उन्हें वैद्य लोग स्वागतकारिणीके मन्त्रीके पास सावधानीसे भेज दें। सतपुड़ा और सह्याद्रि पर्वतकी औषधियां स्वागतकारिणी संग्रह करेगी। विन्ध्याचल, अरवली पर्वत तथा हिमालयकी औषधियां इधरके वैद्य लोग भेज दें। प्रदर्शिनीमें औषधि-पदार्थ, धन्वन्तरि—राजनिघण्टुकी तरतीबसे लगाये जाँयगे। यदि किसीके आसपास कुछ ऐसी औषधियां मिलती हों, जिनका जिक्र निघण्टुमें न हो; किन्तु उपयोगमें वे लाभकारी हों तो उनके प्रचलित नाम और उपयोगके साथ उन्हें भी भेजना चाहिये।

प्रदर्शिनीका दूसरा महत्वका भाग प्रकाशित और अप्रकाशित ग्रन्थोंका होगा। प्रकाशित ग्रन्थ एक जगह देखनेसे यह पता लगेगा कि किस विषयका कौनसा वैद्यक-साहित्य किस पुस्तकमें किस प्रकारका है और वह कहां मिल सकेगा। इसीसे इस विषयका भी विचार निश्चित हो सकेगा कि हमारे किस विषयकी पूर्तिकी आव-श्यकता है। इसी तरह जिनके पास कुछ अप्रकाशित ग्रन्थ हों, वे उन्हें वहां भेज दें। यदि किसी कारणसे कोई अपनी असली पुस्तक न भेजें तो उसकी नकल करवा कर ही भेज दें। यह भी न हो तो संक्षिप्त यही लिख भेजें कि इस पुस्तकका नाम क्या है, उसका कर्ता कौन है, किस संवत्में पुस्तक बनी और आपके पासकी पुस्तक-की नकल किस संवत्में उतारी गयी। पुस्तकमें किस विषयका विवेचन है, उसके किस किस अध्यायमें किस किस विषयका वर्णन है और पुस्तकमें समग्र कितने श्लोक हैं। इन सब बातोंका प्रयोजन इसलिये है कि स्वागतकारिणी सभा वैद्यक-पुस्तकोंकी एक सूची तैयार करना चाहती है। ऐसी सूची बहुत उपयोगी होगी। स्वागतकारिणी सभाकी सूचना है कि ग्रन्थ बहुत सावधानीसे सुर-क्षित रखे जाँयगे।

प्रदर्शनीमें यन्त्रशस्त्रोंका पता लगाकर रखना बहुत आवश्यक है। कुछ यन्त्र नासिकके स्वर्गवासी प्राणाचार्य गोपालरावजीके यहां, कुछ ढाकेके प्रोफेसर नियोगीके यहां और कुछ महामहोपाध्याय कविराज गणनाथ सेन जीके यहां मिलेंगे। अन्यत्र भी जहां जिनके

पास जो जो नये पुराने शस्त्रकर्मके यन्त्र, बस्तियन्त्र, अर्कयन्त्र, तथा रसप्रक्रिया सम्बन्धी यन्त्र हों उन्हें प्रदर्शिनीमें भेजनेका प्रबन्ध करना चाहिये। यन्त्रोंके अतिरिक्त धातु-उपधातु, खनिजद्रव्य, विष-उपविष, रस-उपरस भेजने चाहिये। खपरियाका निर्णय अभी तक सर्वसम्मत नहीं हुआ है, इसलिये उसके भी सब नमूने एकत्र किये जायँगे; और असली खपरियाका व्यवहार करनेकी ओर लोगोंका ध्यान आकर्षित किया जायगा। जो लोग अपनी बनी हुई औषधियां भेजना चाहते हैं वे अभीसे उन्हें तैयार करना आरम्भ कर दें। औषधि भेजनेवाले यह भी लिख दें कि किस ग्रन्थके किस पाठके अनुसार यह तैयार की गयी है।

भ्रमपूर्ण औषधि

इस वर्ष कुछ विवादास्पद औषधियोंका निर्णय किया जावेगा। जिनका निर्णय करना सबसे पहले नितान्त आवश्यक हो उनकी सूची स्वागतकारिणी समिति अथवा स्थायीसमितिके पास भेजनेसे उसपर विचार होगा। स्वागतसमितिने ऐसी कुछ औषधियोंकी एक खेप प्रकाशित भी की है। १ कायफल—कायफल की जो छाल बाज़ारमें मिलती है वह किस वृक्षकी छाल है इसका निर्णय। २ ककड़ासिंगी—इसका वृक्ष सुनते हैं हिमालयमें होता है और उसकी डालियोंपर कीड़ोंकी आकृतिमें रस उत्पन्न होकर जम जाता है, वही फलीकी आकृनिमें ग्रन्थि होकर ककड़ासिंगी कहाती है। किन्तु यह नहीं मालूम पड़ता कि यह होती किस वृक्षमें है। ३ कुछ लोग कहते हैं कि मेदा और मैदा लकड़ी एक ही है। इसका भी निर्णय होना चाहिये कि यह कौन वृक्षकी छाल है। ४ असगन्ध बाज़ारमें मिलती है; परन्तु स्व० शंकरदाजी शास्त्री पदेके वनौषधि गुणादर्शमें इसके पेड़का जो वर्णन दिया गया है, उसके अनुसार यह जड़ी नहीं होती। सिन्धु देशमें दो प्रकारकी असगन्ध बाज़ारमें मिलती है, इसका निर्णय होना चाहिये। ५ खुरासानी अजवाइन कहां कहां होती है, इसका वर्णन। ६ एरोद्स भी एक जातिकी अजवाइन है; परन्तु मीठी होनेसे मीठी अजवाइन कहलाती है, इसका वर्णन निघण्टुमें नहीं मिलता। ७ तगर गठोना बाज़ारमें मिलता है; परन्तु यह नहीं मालूम कि इसका वृक्ष कैसा

होता है और कहां होता है। ८ नलिका—धन्वन्तरि निघण्टुके चन्दनादि वर्गमें इनका नाम है; परन्तु इसका कुछ परिचय नहीं मालूम। ९ कूट—बाज़ारमें भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न रूपमें मिलता है, इसके यथार्थ वृक्षका निर्णय। १० कबीला—बाज़ारमें एक लालचूर्ण मिलता है; परन्तु यह किस वृक्षमें होता है इसका निर्णय होना चाहिये। ११ कंकुष्ट क्या है? भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न वस्तुओंका इससे बोध होता है। १२ दन्ती—कोकणमें जो दन्ती मिलती है उसके फलोंसे जयपाल नहीं निकलता; अतएव असली दन्ती कहां होती है और कैसी होती है? १३ निर्मली—इसके बीज बाज़ारमें मिलते हैं; परन्तु इसका निर्णय होना चाहिये कि यह कहां होती है और इसका वृक्ष कैसा होता है। १४ पद्मकाष्ठ—यह किस वृक्षकी लकड़ी है और वह वृक्ष कहां और कैसा होता है। १५ रासना—इसमें बड़ा मतभेद है भिन्न भिन्न स्थानोंमें यह भिन्न भिन्न वस्तुके रूपमें मिलता है। कहीं इसकी पत्ती और कहीं जड़ ली जाती है। फर्माकोपियामें लिखा है कि वृक्षोंपर जो बलाय जमती है वही रासना है इसका निर्णय। १६ लोधके वृक्ष कहां होते हैं और कैसे होते हैं। १७ चविका—कोई कहते हैं पिप्पलीकी जड़ है, कोई कुछ और ही कहता है इसका निर्णय।

और कुछ विवादास्पद

ऊपर स्वागतकारिणीने कुछ औषधियोंके नाम लिखे हैं और उसने सूचना दी है कि अन्य जिन औषधियोंका निर्णय कराना आवश्यक है, उनकी लोग सूचना दें। हमारी समझमें १ प्रियंगुका भी निर्णय होना चाहिये। कोई कोई कहते हैं कि मालकांगनी ही प्रियंगु है; परन्तु यदि ऐसा ही है तो निघण्टुमें अलग वर्णन क्यों है? २ कंकोलकी जगहपर बहुतसे लोग शीतलचीनी लेते हैं इसका निर्णय होना चाहिये। ३ रस प्रकरणमें ज्वालामुखीके रसकी भावना देनेके लिये कई जगह लिखा है; अतः निश्चय होना चाहिये कि ज्वालामुखी क्या है? इसी तरह त्रायमाण, अग्निजार, शालपर्णी आदिका भी निश्चय होना चाहिये।

जोहो, ईश्वरसे हमारी प्रार्थना है कि पूनेका सम्मेलन सब प्रकारसे सफल और आदर्श हो।

मैंने उस पार मवैया ग्राममें त्रिलोचन तिवाड़ीके मारफत कई प्लेग-रोगियोंको नीमके काढ़े से अच्छा किया है। उस काढ़ेकी विधि यह है—

नीमकी अन्तर्छाल–एक छटांक।
गोलमिर्च–एक तोला।

इन दोनोंको कुचल कर एक सेर पानीमें क्वाथ करे। आधा रहने पर छान ले। इसे तोला तोला भर घण्टे घण्टेमें देता रहे। अथवा बलवान रोगीको दो ही तीन बारमें सब पिला दे। और बच्चों को उनकी अवस्थाके अनुसार इसे देना चाहिये। पीनेके लिये पक्का पानीका व्यवहार करे। इस काढ़ेसे अनेक प्लेग-रोगी आराम हुए हैं।

अब आप देखें तिक्तास प्रधान काढ़ेसे विसर्प तथा प्लेग दोनों दूर होते हैं। ऐसे पुष्ट प्रमाणके होते हम प्लेग-रोगको विसर्पके अतिरिक्त और क्या मान सकते हैं ?

चरकाचार्यने अपने चिकित्सा स्थानके २५वें अध्यायमें इसी प्रकार गृह, वस्त्र, शैया इत्यादि शोधन करनेके लिये कई एक विष-नाशक धूनी भी बतलाये हैं; और डाक्टर लोग भी ऐसी ही क्रिया करते हैं, जैसे—गन्धक, लोहबान और गुग्गुल थोड़ा लेकर अग्निमें छोड़ना।

स्मरण रहे कि रोगके होते ही चिकित्सा करनी चाहिये। यदि रोगने भयंकर रूप धारण कर लिया तो उस समय काढ़ा और आहारादिका समय नहीं रहता। जिस प्रकार विशेष बढ़ा हुआ अग्नि ईंधन तथा घृतके पानेसे बढ़ता है वैसे ही यह रोग भी बढ़ सकता है। ऐसे समयमें विषबटी जोकि सर्पके विषसे सरसों बराबर बनती है तथा ज्वरांकुश जो मोरके पित्ते आदि डालकर बनाया जाता है, काम दे सकते हैं। कोई कोई कविराज इसके अनुभवी हैं। उनसे इसकी विज्ञप्ति प्राप्त कर इसे व्यवहारमें लाना चाहिये। इसकी प्रशंसा मैंने अपने गुरुजीसे सुनी है। वह इस बटीको बनाने ही वाले थे कि उनका देहान्त हो गया।

अब मैं इस लेखको यह लिख कर समाप्त करता हूं कि हमारे देशमें गो-जातिकी संख्याके अल्प होनेसे हम लोगों (देश-निवासियों) की अवस्था खराब हो गयी है। इस रोगमें गोघृत इतना लाभ-दायक है, तब हम कह सकते हैं कि उसी गो-जातिकी कमीसे ही आज हमारे देशमें प्लेग घुसा हुआ है। गो-जातिकी रक्षासे हम लोग अनेक बड़े बड़े रोगोंसे रक्षा पा सकते हैं फिर, इस रोगकी क्या सामर्थ्य है?

भारतमें प्लेग।

(राय पूरनचन्दजी रईस धर्मशाला घाट पटना)

प्लेग क्यों आया?

मेरी अल्प बुद्धिमें प्लेगके आनेका कारण हम लोगोंके घोर पाप-का फल है। जिस तरह गवर्नमेण्ट प्यूनिटिव पुलिस (अतिरिक्त पुलिस) बैठा कर किसी ग्राम, नगर वा प्रदेशको दण्ड देती है, उसी प्रकार हमारे घोर पापरूपी कर्मके फलसे ईश्वर जब घबरा जाता है तब महामारी इत्यादि अनेक व्याधियां फैला कर हम लोगोंका शासन करता है। जिस प्रकार किसी गांव, नगर वा प्रदेशके निवासी मनुष्योंके घोर अपराधी होनेसे वा यों कहिये कि गवर्नमेण्टके बार बार चिल्लाने पर भी तथा व्यक्तिगत अपराधियोंके व्यक्तिगत दण्ड देनेसे जब गवर्नमेण्ट कुछ फल होता नहीं देखती तब मजबूर होकर प्युनिटिव पुलिस बैठा कर उस गांव, नगर वा प्रदेशके निवासियोंको दण्ड देती है, उसी प्रकार ईश्वर भी प्लेगरूपी प्युनिटिव फोर्स बैठा कर हम लोगोंका शासन करता है—

बहुतसे लोगोंका ऐसा कथन होता है कि धर्म्मात्मा वा पुण्यात्मा-को प्लेग क्यों सताता है? उसे पापियोंको सताना उचित है। ऐसे लोगोंसे मेरा विनीत भावसे निवेदन है कि अतिरिक्त पुलिस तभी बैठायी जाती है जब वहांके निवासियोंमें अपराधकी प्यास बढ़ी होती है, उस समय वहां प्यूनिटिव पुलिसके शासनसे अपराधियोंके साथ निरपराध भी सताये जाते हैं। कारण इसका प्रत्यक्ष ही है कि यद्यपि

वे निरपराधी हैं; किन्तु अपराधियोंके संसर्ग-दोषसे वे भी अपराधी समझे जाते हैं। हम लोगोंके धर्म्मशास्त्रोंका भी यही विधान है और हमारी गवर्नमेण्टके कानूनरूपी शास्त्रका भी यही विधान है। जब पापकी मात्रा बढ़ी होती है उस समय यदि कोई वास्तवमें पुण्यात्मा वा धर्म्मात्मा हों भी तौभी उन्हें पापियोंके संग रहने, व्यवहार करने वा खानपान और वार्तालाप करनेके संसर्ग-दोषसे पापी होना ही पड़ता है।

मेरी अल्प बुद्धिमें ऐसे धर्म्मात्माहीको अधिक दण्ड देकर शासन करना उचित है; क्योंकि जो पापी हैं वे तो पापरूपी कूएंमें गिरे हुए हैं। कूएंमें गिरे हुए मनुष्योंको निकालनेका धर्म्म उन्हींका है जो पापरूपी कूएंमें नहीं गिरे हुए हैं। जब धर्म्मात्मा अपने धर्म्मके पालनमें असमर्थ हुए तब उनका धर्म्मात्मापन जाता रहा और अपने धर्म्मसे च्युत होनेसे वह भी पापी हो गये। अब कहिये जब ईश्वरने प्लेग द्वारा उनका शासन किया तब कौनसा अनुचित काम किया। वह हमारे ऐसे कितने भू-मण्डलोंका स्वामी है। उससे ऐसा कार्य कभी होही नहीं सकता जो अनुचित कहा जा सके। यह हम लोगोंके भ्रमरूपी विचारका दोष है कि परमपिताके उत्तम विचारोंके समझनेमें असमर्थ हो जाते हैं। यदि हम लोग सोचने और समझनेका यत्न करें तब भली भांति अपने परमपिताकी नीति समझ सकते हैं, और जब समझेंगे तभी पापसे बचनेकी चेष्टा और यत्न करेंगे।

प्लेगसे लाभालाभ

ईश्वर बड़ा कारसाज है। उसकी सृष्टि विचित्र है। मनुष्य, गौ इत्यादिक अहिंसक पशुओंसे लेकर सिंह, बाघ, सर्पादिक हिंसक और विषैले जीव तक उसकी अनन्त सृष्टिमें वर्तमान हैं। मनुष्य भयवर्ती है। भयरूपी भ्रमके फन्देमें फँसकर लाभदायक जीवोंसे भी अपनी हानि ही देखने लगता है। यह नहीं सोचता कि उसका परम-पिता बड़ा दयालु है। वह भूलकर भी ऐसे जीव नहीं उत्पन्न कर सकता, जिनसे उसकी सृष्टिको हानि पहुँचे। हम लोग अपनी भ्रमात्मक बुद्धिके फेरमें पड़कर अपने दयासागर न्यायरूप परम-पिताकी सृष्टि-

में दोष देखने लगते हैं। उसी प्रकार प्लेगसे जो वास्तविक लाभ ईश्वरीय-सृष्टिको पहुंच रहा है, उसको नहीं समझ सकते। यह सब हम लोगोंके अविद्यारूपी अज्ञानका फल है।

अनुभव वा खोजसे जो मेरी अल्प बुद्धिमें आया वह यही है कि ईश्वरने मनुष्यों पर दया करके वा यों कहिये कि अपनी सृष्टिको किसी भावी विपत्तिसे बचानेके अभिप्रायसे ही प्लेगकी सृष्टि की है; क्योंकि जैसा अभी मैं ऊपर कह आया हूं कि यह कभी सम्भव ही नहीं कि ईश्वर किसी घातक जीवकी उत्पत्ति कर अपनी रचित सृष्टिको हानि पहुंचावे। वह परम-पिता बड़ा दयासागर है। अकारण क्रोध उसमें छू तक नहीं गया है; फिर वह क्यों ऐसा करेगा जिससे उसके न्यायमें धब्बा लगे।

जब मेरे चित्तमें ऐसा भाव जमा वा ऐसा भाव उत्पन्न हुआ, तब मैं ईश्वरीय सृष्टिके क्रम पर विचार करता हुआ यह सोचने लगा कि ईश्वरने कौनसे लाभके लिये प्लेगकी सृष्टि की है। बहुत दिनोंके सोच विचार और अनुसन्धानसे मेरे चित्तमें यह बात जमी कि मनुष्योंके नङ्गे पैर चलनेसे उनके पैरोंसे एक प्रकारका विष निकल कर पृथ्वीमें जम जाता है, जिसे पाद-संघर्षण विष कह सकते हैं। आप सब महानुभावोंको इस बातका अनुभव होगा कि पैरके तलुयेमें कांसेकी कटोरीसे जब तैल मर्दन किया जाता है तब काले रंगका विषैला पदार्थ निकलता है, उसकी मात्रा हर समय हर मनुष्योंके शरीरमें बराबर नहीं होती। इससे निश्चय हुआ कि किसी प्रकारका विष मनुष्य-शरीरमें रहता अवश्य है। वही विष नित्यके चलने फिरनेसे भूमिमें प्रविष्ट होता रहता है और सैकड़ों बरसों बाद जब उसकी मात्रा अधिक हो जाती है, तब उसका निराकरण करना अवश्यम्भावी हो जाता है। यदि उसको किसी प्रकारसे हटाया न जावे तो एक दिन ऐसा अवश्य आवेगा कि वह विष सारी सृष्टिको नाश कर देवेगा। आप लोग शहरोंकी सफाईके लिये म्यूनिसिपलटियोंका प्रबन्ध किया करते हैं, पर इस प्रकारके सैकड़ों विष वा व्याधियोंके निवारणार्थ आपने कौनसा प्रबन्ध वा उपाय किया है? इसका उत्तर यही हो सकता है कि ऐसी व्याधियों का

विषोंका हम लोगोंको पता ही नहीं चलता, तब उसका ज्ञान क्योंकर हो सकता है। जबतक उसका ज्ञान नहीं होगा तबतक उसके निराकरणका उपाय ही क्योंकर किया जा सकता है? ऐसी दशामें यह मानना होगा कि जिस भांति हम लोगोंको अपने लड़कों-बालोंके पालन-पोषण और आरोग्य रखनेकी इच्छा स्वभावतः सदा बनी रहती है। इसी प्रकार हमारे परम-पिताको—जो सर्वज्ञ हैं, जिसका ज्ञान अनन्त है—हमारे पालन-पोषण और आरोग्य रखनेका ध्यान सदा बना रहता है। वह अपनी स्थापित म्युनिसिपलटियों द्वारा सफाईका नियम प्रचारित करता रहता है। उसी ईश्वरीय म्युनिसिपलटी द्वारा पाद-संघर्षण विषके नाशार्थ प्लेगकी सृष्टि की गयी है।

ऊपर कहा गया है कि नंगे पैरों चलने फिरनेसे मनुष्योंके पैरोंका विष—जिसका मैंने पाद-संघर्षण विष नामकरण किया है—कुछ दिनोंमें भूमिमें इकट्ठा हो जाता है। इस पाद-संघर्षण विषका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि जो नगर वा ग्राम जितना ही पुराना है, उसमें प्लेगका ज़ोर उतना ही अधिक होगा। नये नगरोंमें वा नये ग्रामोंमें प्लेगकी भयंकरता कभी भी उतनी नहीं हो सकती। इसी प्रकार पुराने घरोंमें जितनी भयंकरता इसकी हो सकती है; नये घरोंमें उतनी कभी भी नहीं। जिन घरोंके आंगन, दालान, कोठरीका सहन केवल मिट्टीका है और ऐसा घर पुराना है तो उसमें प्लेगकी भयंकरता अवश्य ही अधिक होगी; उससे कम ईंटे चूने और सुर्खीसे बने जमीनवाले मकानोंमें इसकी भयंकरता होगी तथा जिन घरोंके चलने फिरनेकी जमीन वा सहन पत्थरका बना हुआ है उसमें प्लेगकी भयंरकता होही नहीं सकती। यदि ऐसा मकान एकदम नया है तो उसके चारों ओर घोर प्लेग फैला रहने पर भी उस मकानमें प्लेगका आक्रमण नहीं हो सकता। अर्थात् "पाद-संघर्षण विष"की मात्रा जिस नगर, ग्राम वा घरमें जितनी अधिक होगी; प्लेगकी भयंकरता उस नगर, ग्राम वा मकानमें उतनी ही अधिक हो सकती है। पाद-संघर्षण विष जहां जितना कम है वहां प्लेगका भय भी उतना ही कम है, तथा जहां पाद-संघर्षण विषकी मात्रा कुछ भी नहीं है वहां प्लेग पहुंच ही नहीं सकता। आप लोग सहैव

हैं। आप लोग मेरे कथन वा आविष्कारके सत्यासत्यकी जांच अपने अमूल्य अनुभव द्वारा अवश्य जाननेका उद्योग करेंगे। यदि आप महानुभावोंके अनुभवसे प्लेगका होना केवल पाद-संघर्षण विष ही ठहरा तो हमारे देश वा समाजका बहुत कुछ उपकार हो सकता है; क्योंकि उसकी उत्पत्ति मालूम हो जानेसे उसके निराकरणका उपाय सहजहीमें जाना जा सकता है। पटनेमें १२ वर्षोंसे प्लेगका आक्रमण हो रहा है। मेरा घर कच्चा है। मेरे घरमें प्लेगका आक्रमण कई बार घोर रूपसे होता गया; पर पाद-संघर्षण विषके निराकरण ही द्वारा मैं अबतक ईश्वर-कृपासे बचता आया और मैं अपने घरसे कभी भी नहीं हटा। यद्यपि मेरे आसपासके लोग घर छोड़ कर भाग जाते गये; किन्तु मेरी दृढ़ताको देख कितने नहीं भी भागे। अब इससे सिद्ध हुआ कि भूमिस्थित पाद-संघर्षण विषहीके खानेको प्लेगके कीड़ोंकी सृष्टि की गयी है।

अब आप लागोंके सामने प्लेगसे जो लाभ हम लोगोंको पहुंच रहा है उसको प्रमाणित करने वा दिखानेमें मैं कुछ कुछ समर्थ हो सका; पर उससे जो हानि पहुंची वा पहुंच रही है, वह प्रत्यक्ष ही है। उसके बतानेकी कुछ आवश्यकता नहीं है; पर इतना कह देना उचित जान पड़ता है कि यदि हम लोग अभी भी प्लेगको जान सकें तो उससे बचनेका बहुत कुछ उपाय कर सकते हैं। मीठा जिस स्थान पर होगा, चीटियां उसी स्थान पर पहुंचेंगी। यदि मीठा वहां परसे हटा दिया जावे तो चीटियां वहां क्यों आवेंगी। उसी प्रकार पाद-संघर्षण विषको जानकर यदि हम लोग सचेत हो पहिले ही उसे हटा देवें तो प्लेगके कीड़े वहां क्यों पहुंचेंगे?

प्लेगका ज्ञान।

अब नीचे लिखे विषयों पर विचार करनेसे यह बात स्वयं सिद्ध हो जायगी कि "पाद-संघर्षण विष"के निराकरणहीके विचारसे प्लेगके कीड़ोंकी उत्पत्ति की गयी है तथा यह भी सिद्ध होगा कि प्लेगका रोग प्लेगके कीड़ोंहीके काटने वा डसनेसे मनुष्योंको मरता है।

१—किसी मनुष्यके बीमार होनेके प्रथम एक प्रकारकी धीमी धीमी बू पैदा होती है, जिसको मरे हुए चूहोंकी बू कह सकते हैं। इस बूके पैदा होनेके करीब एक सप्ताह बाद चूहे मरने लगते हैं और चूहोंके मरनेके कुछ दिन बाद आदमियोंके बीमार होनेकी पारी आती है।

२—इससे सिद्ध हुआ कि प्लेगके कीड़े पैदा करनेसे ईश्वरकी इच्छा मनुष्य-समाजको हानि पहुंचानेकी कभी भी नही है; क्योंकि प्लेगके कीड़ोंके पैदा होनेकी सूचना उसकी गंध द्वारा प्राणियोंको वह दे देता है या यों कहिये कि जिस प्रकार किसी सर्कस या थियेटरवाले अपने आनेकी सूचना ढोल पीटकर और नोटिसें बाँट कर देते फिरते हैं, उसी प्रकार ईश्वरकृत प्राकृतिक नियमों द्वारा प्लेगके कीड़े अपने आनेकी सूचना अपनी गंध फैला कर देते फिरते हैं और उससे उनका यही अभिप्राय है कि अमुक स्थानमें हम आ गये, वहांसे लोगोंको हट जाना उचित है।

३—जब आरम्भमें प्लेग आया था उस समय लोग कह सकते थे कि हमें ऐसी सूचनाका ज्ञान नहीं है। (यहां पर मुझे इतना कह देना उचित जान पड़ता है कि पश्चिम देशीय जन अपनेको विद्या और ज्ञानका भण्डार समझने लगे हैं; किन्तु जब ऐसी छोटी छोटी बातोंका भी ज्ञान उन्हें नहीं होता तब और बड़ी बड़ी बातोंके ज्ञानकी हिमायत करना सिवा अपने मुंह मिया मिट्ठू बननेके और क्या कहा जा सकता है। अवश्य ही सांसारिक कार्योंमें तो कुछ उन्नति उन्होंने की है; किन्तु आध्यात्मिक ज्ञानमें तो वह सबसे पीछे पीछे हैं। जबतक आध्यात्मिक ज्ञान कुछ भी नहीं होता तबतक कोई भी मनुष्य-समाजका क्योंकर और किस प्रकार भला हो सकता है। अस्तु, किसी और समय इस विषयका विवेचन हो सकेगा;) किन्तु अब तो प्लेगको आये बहुत दिन हो गये, अब मनुष्य क्यों नहीं इससे बचनेका उपाय करते। मैंने अच्छी तरहसे देखा है और दूसरोंको भी समय समय पर दिखला दिया है कि चूहे इससे बचनेका उपाय अब बहुत करने लगे हैं। आरम्भ कालमें तो चूहोंको भी इसके गंधका ज्ञान नहीं था; किन्तु अब तो मैं देखता हूं कि

बू पैदा होनेके बहुत पहिले चूहे प्लेगका आगमन समझ जाते हैं और वह अपना अपना घर छोड़ दूसरे स्थानोंमें चले जाते हैं। यह भी देखा गया है कि जिन चूहोंको दूसरी जगह जानेका किसी विशेष कारणसे अवसर नहीं मिलता वह भी प्लेगके दिनोंमें छप्पर और छतों ही पर रहते हैं। नीचे जमीन पर नहीं उतरते। आपके खानेकी चीजोंको ऐसे समयमें चूहे कभी भी उसे खाने नीचे नहीं उतरेंगे। बन्दरों तथा और कई प्रकारके पक्षियोंको भी इससे बचनेका उपाय करते देखा गया है, तब मनुष्योंके लिये जो अपनेको सब जीवोंका स्वामी बनना चाहता है; कितनी बड़ी लज्जाका विषय है कि वह हाथ पर हाथ दिये बैठा रहे और उससे बचनेका उपाय न करे। अवश्य ही इसकी उन्हें बड़ी शर्म होनी चाहिये कि पशु जो ज्ञानहीन कहे जाते हैं सो तो प्लेगसे बचनेका उपाय करें और हम लोग चुप-चाप बैठकर विधाताको दोष देते और कोसते हुए अपना प्राण खोवें। इन छोटे छोटे पशुओंसे मनुष्योंको शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। अब ऐसी दशामें हम लोगोंको उचित है कि इसकी गंधके विचार कर उससे बचनेका उपाय करें। इस समय आप लोग बड़ी दूर दूरसे बड़ा परिश्रम उठाकर आये हैं, इससे आप महानुभावों-का यही अभिप्राय है कि प्रत्येक व्याधियोंकी खोज परताल कर मनुष्य-समाजको लाभ पहुंचाया जावे। ऐसी दशामें यदि मैं अपना अनुभव आप लोगोंके सामने निवेदन करूं तो आप मुझे अहंकारी नहीं कहेंगे। सम्भव है कि मेरा अनुभव मिथ्या हो। आप लोगोंके सद्विचारमें प्लेगका कारण कुछ और ही हो, जिससे मेरा अनुभव मिथ्या ठहरे; पर जब आप लोग इस बातकी खोजके लिये यहां इकट्ठे हुए हैं तब जो मैं अपना अनुभव न निवेदन करूं तो मेरी बड़ी कृतघ्नता होगी। इसलिये निःसंकोच भावसे अपना अनुभव निवेदन करना मैं अपना धर्म्म समझता हूं। मैंने जो अनुभव प्राप्त किया है उससे कह सकता हूं कि अमुक स्थान वा घरमें प्लेग पहुंचा है वा नहीं वा कबतक पहुंच सकेगा। इन बातोंके बतानेमें मैं बहुत पटु हो गया हूं। यदि मेरा अनुभव ठीक है और यदि आप लोग यत्न करेंगे तो मुझसे अधिक इस बातके बतानेमें आप भी पटु हो सकते हैं।

४—बहुतोंका कहना है कि वायुके दूषित हो जानेसे प्लेगकी उत्पत्ति होती है। मेरे चित्तमें भी इसका बड़ा सन्देह हुआ था कि वास्तवमें वायुके दूषित हो जानेसे प्लेग फैलता है वा किसी विषैले कीटाणुओं द्वारा। अब इस कठिन विषयकी मीमांसा करनी पड़ी। इसमें मेरा बहुत समय लग गया। मेरे ऐसे सामान्य अवस्थाके मनुष्यके पास दूरबीनका अभाव है और मैं स्वतंत्र प्रकृतिका मनुष्य हूं, इसलिये बिना निजकी जांच किये बड़े बड़े डाक्टरोंके कथन पर विश्वास भी नहीं कर सका, तब इसकी मीमांसा होती कैसे; क्योंकि कीड़े इतने छोटे हैं कि खुली आंखोंसे दिखाई पड़ते नहीं। ऐसी दशामें स्वतन्त्र विचार द्वारा इस कठिन रोगकी उत्पत्तिकी मीमांसा करना बड़ा कठिन हुआ और मैं प्लेगकी गतिको निरीक्षण करता हुआ कुछ काल तक विचार करता रहा। कठिन खोजके बाद मैंने निश्चय किया कि प्लेग कीड़ों ही द्वारा फैलता है। उसकी मीमांसा नीचे है—

५—प्लेगकी बू फैलने पर यह देखा गया है कि उसकी गति किसी विशेष दिशाकी ओर होती है। वायु चाहे किसी दिशाकी ओर बहता हो; पर वह अपने निर्धारित दिशाहीकी ओर जांयगे।

६—प्लेगके कीड़े राह छोड़ कुराह नहीं जांयगे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि प्लेग जिस महल्लेमें फैला हो यदि उस महल्लेमें किसीका मकान चलते राहसे अलग किसी कोने, अंतरेमें पड़ा हो और वह मकान चाहे कैसा ही गन्दा हो, वहां प्लेग शीघ्र नहीं पहुंच सकता; अर्थात् जितनी शीघ्रतासे वह राहपरके मकानोंमें फैलेगा, उतनी जल्दी कोने अंतरेके मकानोंमें नहीं। अवश्य ही कुछ काल पाकर वहां पहुंच सकता है। यदि वायु बिगड़नेसे प्लेग फैलता तो ऐसा नहीं होता।

६—प्लेगके चलनेकी गति भी निर्धारित है। जितने छोटे ये जीव हैं उतनी ही धीमी गति भी इनकी है। एक दिन रातमें ४० फुटसे ६० फुट तक यह जा सकते हैं। इनकी दोनों प्रकारकी गतियों पर ध्यान रखनेसे यह बतलाया जा सकता है कि अमुक स्थानमें रोग कबतक पहुंचेगा। बिगड़े वायुमें ऐसी गतियोंका होना असम्भव है।

७—प्लेगके कीड़े साफ़ सुथरे स्थानोंमें उतनी ही जल्दी पहुंच सकते हैं, जितने एक गन्दे मकानमें। बल्कि कह सकते हैं कि यदि राह साफ़ है तो गन्दे मकानकी अपेक्षा साफ सुथरे मकानोंमें ही यह जल्द पहुंच सकते हैं। यह बात बिगड़े वायुमें नहीं पायी जाती।

८—एक मकानके तमाम हिस्सोंमें प्लेग एक साथ नहीं हो सकता। मकानके किसी विशेष भागहामें रहता है। यदि मनुष्य मालूम कर सके कि मेरे मकानके अमुक भागमें प्लेगके कीड़े पहुंच गये हैं और वह अपनी बुद्धिको काममें लावे तो वह ऐसे मकानमें रहकर भी प्लेगके आक्रमणसे बच सकता है।

९—बहुतसे लोगोंका यह प्रश्न हो सकता है कि प्लेगकी गति जब एक दिनमें ५०। ६० फुटसे अधिक नहीं, तब बड़े बड़े शहरोंके सब भागोंमें यह क्योंकर थोड़े ही कालमें पहुंच जाता है, तथा नगरोंको छोड़ वह बहुत दूर दूरके ग्रामोंमें क्योंकर पहुंच जाता है। फिर ग्रामोंको कौन कहे यह सैकड़ों कोसोंपरके नगरोंमें भी फैल जाता है, तथा देशके किसी किसी भागमें यह आजतक क्यों नहीं पहुंच सका। किसी नगरमें एक ही बार होकर फिर यह नहीं हो सका, और किसी जगह हुआ भी तो इसका जोर अधिक नहीं हुआ।

१०—मेरी अल्प बुद्धिमें यह प्रश्न बड़ा जटिल है। इसकी मीमांसा सहज नहीं है। बड़े बड़े अनुभवी विद्वान इसकी कुछ मीमांसा कर सकें, यह भी सोचना असम्भव मालूम होता है। जब एक एक देश-की गवर्नमेण्ट अपने अपने देशके प्रबन्धके लिये भविष्यमें कैसी आज्ञा प्रचार करेगी वा कौनसी नीतिका अवलम्बन करेगी—इन थोड़ीसी बातोंका जानना भी लोगोंको कठिन हो जाता है, तब ईश्वर अपनी सृष्टिका शासन किस प्रकारसे करेगा—यह जानना तो बड़ा ही कठिन है; किन्तु जिस प्रकार बड़े बड़े राजनीतिज्ञ अपनी गवर्नमेण्टकी भविष्य नीतिका अनुमान कर सकते हैं और ऐसा अनुमान कभी सत्य और कभी मिथ्या भी हो जाया करता है, उसी प्रकार ईश्वरकी सृष्टि-क्रम पर विचार करनेसे इसका कुछ पता लग सकता है; पर सम्भव है कि ऐसा अनुमान ठीक न होवे। अस्तु, इस विषय पर अपना विचार नीचे प्रकट करता हूं।

११—अब आप लोग ईश्वरकी सृष्टि-क्रम पर थोड़ी देरके लिये विचार कीजिये । आप देखेंगे उसका क्रम कैसा विचित्र है । किसी वर्ष गेहूंके कीड़े पैदा करता है तो किसी वर्ष चनेके, कभी मटरमें कीड़े पैदा होते हैं और कभी धानमें गरदा लगता है, कभी आलूमें कीड़े पैदा होते हैं तो कभी अन्य सागोंमें, और यह भी तमाम स्थानोंमें एक साथ नहीं; इसका कारण क्या? हमारी समझमें तो आप लोग एक स्वरसे यही कहेंगे कि ईश्वरसे प्रेरित प्रकृति देवीका यह प्रताप है । इन सब विषयोंमें मनुष्योंकी बुद्धि काम नहीं कर सकती । तब मैं भी कह सकता हूं कि प्लेग भी ईश्वरीय Punitive police प्युनिटिव पुलिस है । यह हम लोगोंके पापोंका फल है; जिसका फल हम लोगोंको भोगना ही पड़ेगा । अवश्य ही चोरी व्यभिचार इत्यादि दुष्कर्म्मोंकी सजा प्लेग फैला कर नहीं दी जा सकती; क्योंकि ऐसे कर्म्मोंके लिये शास्त्रोंमें दण्डका अलग विधान है । गवर्नमेण्ट भी ऐसे कर्म्मोंका दण्ड Punitive police अतिरिक्त शक्ति बैठा कर नहीं देती । यह प्लेगरूपी विपत्ति हम लोगोंके किसी घोर पापके फल हैं । फूट, अनैक्य, देशके प्रति प्रेम और ऐक्यताका अभाव, देश-द्रोह तथा अपने अपने धर्म्ममें अश्रद्धा, ये महापाप कहे जा सकते हैं; अर्थात् जन-साधारणका जिन दुष्कर्म्मोंसे सम्बन्ध है, गवर्नमेण्ट वैसे ही दुष्कर्म्मोंके शासनके लिये Punitive police प्युनिटिव पुलिस बैठाती है, तब ईश्वर—जो हमारे ऐसे कितने ब्रह्माण्डोंका स्वामी और शासक है अपनी सृष्टिमें फैले हुए दुष्कर्म्मों का क्यों न महामारी इत्यादिक फैला कर शासन करेगा । यह विषय इतना बड़ा और दुस्तर है कि इसका विवेचन एक स्वतन्त्र पुस्तकके द्वारा हो सकता है । प्लेग-विषयक छोटेसे लेखमें इसका विवेचन करना असम्भव है; इसलिये प्रसंगवश थोड़ासा कह दिया गया ।

१२—यहांपर एक बात और कह देनी उचित जान पड़ती है कि जिस प्रकार अन्य कई प्रकारके कीड़े पतंगे इत्यादि किसी नगर वा देश विशेषमें बहुतायतसे पैदा होते हैं उसी प्रकार प्लेग भी—अर्थात् प्राकृतिक उलटपुलटके कारण किसी नगर वा देश विशेषमें वहांके जल, वायु और मिट्टीमें ऐसा परिवर्तन हो जाता है, जिससे वहां उस प्रकारके कीड़े बहुतायतसे पैदा हो जाते हैं । दूसरे वहांके जल

वायु ऐसे कीड़ोंके पैदा करनेके अनुकूल न भी हुए हों तो वैसे कीड़े किसी उपयुक्त स्थानमें पैदा होकर उस स्थानमें पहुंच सकते हैं। मनुष्य यदि अपनी बुद्धिको काममें लावे और प्राकृतिक उलटपुलट-को देखता रहे तो बहुत कुछ पहिलेसे जान सकता है। मैं ऊपर कह चुका हूं कि मैं ऐसा अनुमान करनेमें कुछ कुछ अभ्यसितसा हो गया हूं।

मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि जब दो वर्षोंके विश्रामके बाद संवत् १९६७ के जाड़ोंके आरम्भकालमें प्लेगका आक्रमण हमारे नगर पटनेमें होने लगा उस समय मेरा ऐसा विचार हुआ कि मैं पटना म्युनिसिपलटीको लिखूं कि इस वर्ष पटनेका जल-वायु प्लेगके लिये इस समय अनुकूल नहीं है; पर प्लेगका आक्रमण इस नगर पर बाहरसे पूरबकी ओरसे होनेवाला है। ऐसी दशामें इसका आक्रमण इस नगर पर थोड़े ही व्यय और परिश्रमसे रोका जा सकता है। ऐसा विचार चित्तमें होते ही मैं चिट्ठी लिखनेको बैठ गया और कुछ थोड़ासा लिखा ही था कि चित्तमें विचारकी बिजली दौड़ गयी कि मेरे ऐसे लिखने पर म्युनिसिपलटी कुछ करेगी तो नहीं; पर मुझे पागल अवश्य बतलावेगी। बस मैं चुप हो गया और कुछ नहीं लिख सका; किन्तु अपना ऐसा विचार म्युनिसिपलटीके कई सभ्यों-से तथा और भी कई मित्रोंसे कह सुनाया था। उस वर्ष अवश्य ही प्लेगका आक्रमण इस नगर पर हुआ; परन्तु जल-वायु अनुकूल नहीं होनेके कारण उसका कोई विशेष जोर न हो सका। दूसरे वर्ष सं० १९६८ और १९६९ में इसका आक्रमण हमारे नगर पर बड़ी ही भयंकरतासे हुआ।

मैं अपने पत्रमें (क्षत्रिय समाचारमें) समय समय पर प्लेगकी उत्पत्ति तथा इससे बचनेके सरल उपायों पर टिप्पणियां करता आया हूं। प्लेगका आविर्भाव तो प्रकृति-देवी द्वारा ही होता है; किन्तु इस संसारमें इसका आविर्भाव होनेसे इनकी वृद्धि अण्डों बच्चों ही द्वारा होती है। इस संसारके प्राणियोंका क्रम देखनेसे यह बात जानी जाती है कि बड़े जीवोंको एक ही बच्चे होते हैं, और यह भी देरसे। जैसे जैसे जीव छोटे होते जाते हैं, वैसे वैसे उनके बच्चे भी

अधिक होते जाते हैं तथा जल्द जल्द भी। उनके विनाशका काल भी उनकी बड़ी छोटी अवस्था ही पर निर्भर करता है। इससे ईश्वरका अभिप्राय भी प्रत्यक्ष है; क्योंकि छोटे जीवोंका विनाश जब जल्द जल्द होगा, तब उनकी उत्पत्ति जल्द जल्द बहुतायतसे न होवे तो उनका वंश ही संसारसे लोप हो जा सकता है। बस इसी विचारसे उसने अपनी सृष्टिका क्रम ऐसा रखा है।

चीटियां इत्यादिक जीव जितने छोटे हैं उनकी सन्तान भी उतनी ही शीघ्र और बहुतायतसे होती है और वह भी अण्डों द्वारा। प्लेगके चींटी इत्यादिक अण्डे देनेवाले जीवोंके सदृश हैं, इसलिये अनुमान प्रमाण द्वारा तथा और भी कई लक्षणोंसे यह जाना जाता है कि इनकी वृद्धि भी अण्डों ही द्वारा होती है। यह इतने छोटे जीव हैं जिससे छोटे जीवोंका क्रम देखने पर यह अनुमान होता है कि एक एक कीड़ोंके अण्डे और बच्चे बहुतायतसे होते हैं। यदि ऐसा न होता तो इनका नाश शीघ्र ही हो जाता।

जब और जीवोंके अण्डे बच्चे देनेका काल निर्धारित है, तब इनका काल भी अवश्य ही निर्धारित होना चाहिये। इस विषयमें मैं अनुमान द्वारा जहांतक जांच सका हूं, उससे मुझे मालूम हुआ है कि इनके अण्डे बच्चे देनेका काल प्रथम तो आश्विन और फिर फाल्गुण है। यदि आश्विनमें वर्षा हुई तो इनकी वृद्धि अवश्य होगी, उसी प्रकार फाल्गुणमें वर्षा होनेसे भी; पर ध्यान रहे कि जितनी वृद्धि आश्विनमें वर्षा होनेसे इनकी होती है, उतनी फाल्गुणमें नहीं। यह अनुमान मेरा अपने नगर (पटना) का है। सम्भव है दूसरे नगरोंमें इसमें कुछ भेद पड़ता हो। आप लोग बड़े अनुभवी हैं, अपने अनुभव द्वारा इसके जांचनेका प्रयत्न करेंगे।

ज्येष्ठ मासमें प्रायः करके यह वृद्धावस्थाको प्राप्त होते हैं और वर्षाकाल इनके लिये बड़ा विपरीत है। वर्षाकालमें प्रायः करके यह नाशको प्राप्त हो जाते हैं।

मैं अभी ऊपर कह आया हूं कि आश्विन और फाल्गुण मास ही इनके अण्डे बच्चे देनेका समय है; इससे यह न समझना चाहिये कि अन्य कालमें यह बच्चे न देते होंगे। यह हो नहीं सकता। यदि

ऐसा होता तो यह कब नाशको प्राप्त हुए होते। अब जरा सृष्टि-क्रम पर पुनः विचार कीजिये। आप देखेंगे कि कुत्ते और बिल्लियोंके बच्चे देनेका समय कार्त्तिक और माघ निर्धारित है। "कार्त्तिक कुतिया माघ बिलाई" यह कहावत भी है; पर देखा जाता है कि कार्त्तिक और माघमें तो यह बच्चे प्रायः करके अवश्य देते ही हैं; पर कभी कभी अन्य कालोंमें भी दे देते हैं। दूसरे जीवोंका क्रम भी ऐसा ही है; पर ऐसे क्रमके विपरीत भी हुआ ही करता है। उसी प्रकार प्लेगके कीड़ोंके विषयमें भी समझना होगा।

हमारे डाक्टरोंका ऐसा अनुमान हुआ था कि गर्मीसे प्लेगके कीड़े नाश हो जाते हैं, उनका ऐसा अनुमान मेरी अल्प बुद्धिमें कभी भी ठीक नहीं हुआ।

मेरा अनुमान ही इस विषयमें अबतक ठीक उतरता आया है और ऐसी आशा है कि भविष्यमें भी वही ठीक होगा। वर्षाकालका समय निकट आनेसे ही वृद्ध कीड़े मरने लगते हैं; पर जो युवा हैं वह आश्रय ढूंढ़ना शुरू करते हैं। बैशाख और ज्येष्ठकी कड़ी गर्मियोंमें भी मैंने देखा है कि बड़ी मुस्तैदीसे फनफनाते हुए झुण्डके झुण्ड इनके जा रहे हैं, तब क्योंकर समझा जाये कि कड़ी गर्मीसे इनको भय होता है। क्या चीटियोंको कभी ऐसा होता है। अवश्य ही जिस प्रकार चीटियां कड़ी धूपसे भागना चाहती हैं, उसी प्रकार यह भी करते होंगे।

आश्रय लेना।

अवश्य ही आप लोग पूंछेंगे कि आश्रय लेना किसे कहते हैं। जेठ बैशाखकी कड़ी गर्मीसे तो यह नहीं घबराते; पर न जाने क्यों बर्षाकाल समीप आता जान यह जीव भय खाने लगता है। इसलिये खुली जगहोंको छोड़ यह उस समय अंधेरी ठंढी कोठरियोंमें छिपने लगते हैं, उसीको मैं आश्रय लेना कहता हूं। ऐसे समय यदि हम लोग बुद्धिको काममें ला सकें तो इनका नाश सहजहीमें कर सकते हैं; *क्योंकि गंध द्वारा यह जाना जा सकता है कि किन स्थानोंमें इन लोगोंने आश्रय लिया है। बीज न रहेगा तो फिर आश्विनमें इनकी* वृद्धि क्योंकर होगी।

चूहोंके मारनेसे हानि।

पहिले तो डाकूरोंको मच्छरों ही द्वारा प्लेग फैलनेकी बात सूझी थी; पर अब तो चूहोंके मारनेकी भूंख सवार हुई है। यदि ऐसी ऐसी बातें न सोचा करें तो लोग जानें क्योंकर कि डाकूर लोग बड़े बुद्धिमान हैं। चाहे उनके कथनमें जो तत्व हो; पर मेरे चित्तमें तो यही भाषता है कि मिथ्या भय और विचारने उनके चित्तमें ऐसा विश्वास उत्पन्न किया है, अन्यथा ऐसा न होता। यहां पर तो ऐसी ही दशा कही जा सकती है कि कोई मनुष्य न्यायालयमें किसी व्यक्ति पर नालिश करे। जिस पर नालिश होगी उसको उसकी सूचना मिलना जरूर है; जिससे उस नालिशके सत्यासत्यके विषयमें वह यथार्थ उत्तर दे सके। ऐसी नालिशोंकी सूचना देनेका काम चपरासियोंका है। अब यदि चपरासी न रखे जावें वा मार डाले जावें तो प्रतिवादियोंको (मुद्दालहमको) ऐसी नालिशकी खबर क्योंकर हो सकती है। खबर न होनेसे एकतरफा डिगरी उसपर हो जावेगी; जिससे यथार्थ न्याय न हो सकेगा। चूहोंका बंश नाश कर देनेसे वही दशा मनुष्योंकी होगी। गंधका ज्ञान तो जन-साधारणको है ही नहीं और न बिना अनुभवके होही सकता है। ऐसी दशामें प्लेग आनेकी सूचना चूहोंहीके मरनेसे जन-साधारणको होती है। चूहोंके अभावमें प्लेग आनेकी सूचना जन-साधारणको न मिल सकेगी और उस समय मनुष्य वृथा ही प्राण खोवेंगे। प्लेगकी आमद जाननेका जो कुछ भी साधन उनके पास है वह भी जब न रहेगा, तब कहिये इससे बचनेका उपाय क्योंकर वे कर सकेंगे। चहोंके मारनेके पहिले डाकूरोंको इसका भी तो कुछ प्रबन्ध कर देना उचित है; जिससे जन-साधारणको प्लेग पहुंचनेकी सूचना सहजमें मिलती रहे। सम्भव है उनका कथन सत्य हो; पर चूहोंसे प्लेग पहुंचनेकी सूचना जन-साधारणको मिल जाया करती है। यह भी एक बड़ा लाभ है, इसलिए चूहोंके मरवानेके पहिले इस बातका भी ख्याल डाकूरोंको होना चाहिए।

कीड़ोंकी आकृति।

कीड़े इतने छोटे हैं कि इनकी आकृतिका ज्ञान तो हम लोगोंको खुली आंखों द्वारा होना असम्भव है; पर प्लेगके दिनोंमें ऐसा देखा गया है कि जिस मकानमें प्लेगका आक्रमण बहुत दिनोंसे हो रहा है, वहां एक प्रकारके कीड़े देखे गये हैं। इन कीड़ोंकी आकृति मोरी-में रहनेवाले कीड़ोंके सदृश्य है; अन्तर केवल इतना ही है कि इनके थोथनोंपर दो और दुमके पास एक काला दाग देखा गया है। आश्चर्य तो इस बातका है कि उस मकामका सहन साफ और सुथरा है, अभी झाड़ा बुहारा और पानीसे धोया गया है और फिर घंटे ही आध घंटेमें वहां पर पचासों कीड़े चलते फिरते पाये गये। वहां पर बहुत खोजने पर भी उनके रहनेकी कोई जगह पायी नहीं गयी। जिन लोगोंने ऐसे कीड़ोंको अपने हाथोंसे हटाया वा पैरोंसे दबाया उन्हें प्लेग-रोगसे बीमार होते तथा मरते देखा गया है। इस कारण ऐसे कीड़ोंको लोग प्लेगका कीड़ा कहने सुनने लगे हैं। मेरा अनुमान इनके बारेमें अधूरा है। इसलिए मैं पूरे तौरसे नहीं कह सकता कि यह प्लेगके कीड़े हैं; पर तौभी उन्हें प्लेगका कीड़ा मैं समझता हूं। यदि मेरा और दूसरे लोगोंका अनुमान ठीक हो, तो बहुत सम्भव है कि प्लेगके कीड़ोंकी आकृति जो बहुत ही छोटे हैं और खुली आंखोंसे नहीं दिखाई देते, इन्हींके ऐसी होगी। इन कीड़ोंमें तेजी अधिक है। यदि इनको छू दीजिये तो बड़ी फुरतीसे बहुत ऊंचे तक यह उछल जाते वा उड़ जाते हैं। कुछ दिनोंकी और खोजके बाद इनका यथार्थ पता चल जायगा।

इसका क्या प्रमाण है कि प्लेगके काटनेहीसे मनुष्य मरता है।

अवश्य ही यह विषय अनुमान ही द्वारा जाना जा सकता है। क्योंकि कीड़ोंके छोटे होनेके कारण और कोई दूसरा साधन इसके जाननेका नहीं है। समय थोड़ा है इस वास्ते अपना विचार बिस्तार-से न लिख कर थोड़ेहीमें कहनेका इरादा करता हूं।

(१) प्लेग घरमें पहुंचनेसे उस घरके सब मनुष्योंको नहीं धरता, बल्कि किसी किसी घरमें तो दो ही एकको मारता है और किसी घरके सभी मनुष्य मर जाते हैं। यदि प्लेगके द्वारा वायु बिगड़नेसे यह रोग फैलता तो ऐसा नहीं होता।

(२) ऐसे घरोंके उन्हीं मनुष्योंको बीमार होते और मरते देखा गया है जो उन भागोंमें जाते आते हों, जहां प्लेग पहुंचा हुआ हो। यदि वायु बिगड़नेसे होता तो अन्य भागोंमें रहनेवालोंको भी धरता।

(३) जो नंगे पैर चलने फिरनेवाले हैं, वही बीमार होते हैं। जो हरवक्त जूता पहिने घूमा करते हैं उन्हें प्लेग पकड़ते बहुत कम देखा गया। वायु बिगड़नेसे ऐसा नहीं होता।

(४) प्लेगके कीड़े प्रायः उन्हीं घरके उन्हीं भागोंमें होते हैं जहां अन्न और खाने पीनेकी चीजें रखी जाया करती हैं। ऐसी दशामें अन्नों और खाने पीनेकी चीजोंमें इनका घुस जाना स्वाभाविक है; पर उन खाने पीनेकी चीजों तथा अन्नोंके खानेवाले मनुष्योंको बीमार होते नहीं देखा गया। अनुमान द्वारा मुझे यह भी मालूम हो सका है कि जिस प्रकार सांपका विष खा जानेसे मनुष्य नहीं मरता, सांपका विष यदि कोई खा जाय तो मरेगा नहीं; पर कुछ देर तक उसकी गर्मी उसे अवश्य सतावेगी। उसी प्रकार प्लेगका विष खा जानेसे मनुष्य मरेगा नहीं; पर किंचित् गर्मी उसकी हो जा सकती है।

प्लेगका डसना वा काटना क्यों नहीं मालूम पड़ता।

अन्य अनेकों कीड़े मनुष्योंको प्रायः काटा ही करते हैं, यदि वे बड़े हों तो उनके काटने वा डसनेका ज्ञान मनुष्योंको हो जाया करता है और यदि वे छोटे हैं तो उनका ज्ञान नहीं होता; फिर प्लेगके कीड़े तो बहुत ही छोटे हैं; इनके काटने वा डसनेका ज्ञान सहजमें ही क्योंकर हो जा सकता है। कभी कभी ऐसे छोटे कीड़े देखे जाते हैं कि जिनके काटने वा डसनेका तो ज्ञान जरा भी नहीं होता; पर शरीरमें खाज शुरू होकर चकत्ते जैसे पड़ जाते हैं तब प्लेगके

कीड़े जो बहुत ही छोटे हैं इनके काटने वा डसनेका ज्ञान ही क्योंकर हो सकता है ।

प्लेगके विषका प्रसार ।

सब विषैले कीड़ोंके विषोंके क्रमपर ध्यान देनेसे यह बात देखी जाती है कि सभोंके विषका प्रसार एक साथ और एक जैसा नहीं होता । सांप और बिच्छुओंका विष जब कि घंटे दो घंटोंहीमें काम तमाम कर देता है तब कुत्तोंका विष महीनों वा बरसोंमें चढ़ता है । छोटे छोटे कीटाणुओंके विषका चढ़ाव भी एक जैसा नहीं होता । किसीका तुरंत चढ़ता है और किसीका देरसे । प्लेगके कीड़ोंके काटने वा डसनेसे विषके प्रसारके विषयमें जहांतक अनुमान कर सका हूं किसी किसी मनुष्य पर तो इसका प्रसार एक ही दो दिनों-में होता है और किसी किसी पर ८ । १० दिनोंतकमें ।

जिस मनुष्यको प्लेगके कीड़ेने काटा वा डसा है वह यदि कुछ भी बुद्धि रखता है तो मालूम कर सकेगा कि मुझे प्लेग होनेवाला है, अर्थात्—उस मनुष्यके नाकोंसे कुछ पानी आने लगेगा, शरीरमें कुछ आलस मालूम पड़ने लगेगा और कभी कभी माथा घूमता हुआ मालूम पड़ने लगेगा । ठीक वैसी ही दशा मालूम पड़ने लगेगी, जैसा कि बहुत हलकी भांग पीनेसे मालूम होने लगती है । आमतौरसे लोग ऐसी दशा उपस्थित होने पर इसका कुछ विचार नहीं करते और उस समय चिताने पर भी कहने लगते हैं कि अमुक चीजके खाने वा हवा लग जानेसे ऐसा हुआ है । यदि ऐसी दशा उपस्थित हो जाने पर दवा दी जावे तो प्रायः १०० में १० अच्छे होनेकी आशा है ।

उपसंहार ।

ऊपर संक्षेपमें प्लेगकी उत्पत्तिका कारण और लक्षण तथा उसके जाननेका साधन बताया गया; पर समयके अभाव तथा मेरे कुछ आलस्यसे बहुतसी जरूरी बातें लिखनी रह गयीं । आप लोग अनुभवी विद्वान हैं । आप लोगोंके लिये इशारा काफी है । ऐसी दशामें आप मेरे थोड़ेसे निवेदनको बहुत जानते हुए मेरी त्रुटियोंको क्षमा

करेंगे। यदि हो सका और ईश्वरने कृपा रखी तथा आप लोगोंने इस दुष्ट रोगके विषयमें कुछ और जानना चाहा तो आगामी वर्षमें मैं कुछ और निवेदन करनेको समर्थ हो सकूंगा। इच्छा तो थी कि चिकित्साके विषयमें कुछ लिखता; पर आप लोग बड़े बड़े अनुभवी सद्वैद्योंके सामने मेरा साहस चिकित्साके विषयमें कहनेको न हो सका और न समय ही मिल सका। जो कुछ इस थोड़े समयमें निवेदन कर सका उसीको मैं अपना अहोभाग्य समझता हूं। अब केवल इतना ही निवेदन करना रह गया है कि प्लेगका निदान ठीक-से ज्ञात हो जानेसे उसकी चिकित्सा कुछ कठिन न रहेगी।

जब बड़े बड़े विद्वान भी प्लेग-तत्वको विचारनेमें असमर्थ हैं, तब मेरे ऐसे अल्पज्ञ मनुष्यके लिये इस तत्वका समझना बड़ा कठिन है; तथापि इतने बड़े विद्वन्-समाजके सामने जो कुछ अपना अनुभव समझानेको उद्यत हुआ, यह मेरी बड़ी ढिठाई है। आशा है कि विद्वन्-समाज मेरी ढिठाईको क्षमा करते हुए मेरा अनुभव कहांतक ठीक हुआ है, इसकी जांच अपनी विशाल बुद्धि द्वारा निर्णय करनेकी चेष्टा करेंगे।

श्रीमदायुर्वैदिकाचार्याः।

इह खलु कस्या अपि जातेः पुनरुज्जीवनं तदैतिह्यायत्तम्, भारतीया अपि परमैतिह्यलेखका निजान् कुमारान् सम्बोधयितुं कदाचिल्लिखितवन्त इत्यनवद्ये विषये कस्य सन्देहः स्यात्। परन्तु भारतस्य दौर्भाग्यान्नष्टायां सर्वसम्पत्तौ तद्देशसम्पद्भूतमैतिह्यमपि यवनैर्ज्वालितमिति संभाव्यते चेत् महान् खेदस्यावसरः। अथ यथा कथंचित्पुनरपि भारतमुद्दिधीर्षूणामाग्रह इतिहासविषये प्रवृत्त इति दर्शं दर्शं नश्चेतः प्रसीदतीव। इति सत्यपि धीमान्द्ये विदुषामनुग्रहेण लिखितुमुत्सहामहे।

महोदयाः! दीर्घंजीविताध्यायविलोकनेन एवमेवागम्यते— "आत्रेयो गौतमः सांख्यः पुलस्त्यो नारदोऽसित" इति भगवान्

कृ[1]ष्णात्रेयापरनामा चरकः रावणपितामहः श्रीपुलस्त्यश्चेत्येतौ एककालीनौ । अथ च शरीरविचयाध्याये शारीरस्थाने "इन्द्रियाणीति जनको वैदेहः" इति दृश्यमानत्वात् श्रीरामस्य श्वसुरो जनको[2]ऽपि चरकात्प्राचीनस्तत्समानकालीनो वा इति विषये नास्माकं विचारः, किन्तु त्रेतायामयं महानुभाव इति साधनमेवोद्देशः ।

नचामुना मुनिपुंगवेन केवलमयमेव ग्रंथो निरमायि, अपि तु,—

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन ।
यो ऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि[3] ॥"

इति पद्यदर्शनात् अनुमानाच्च, अनेनैव "योगदर्शनम्" व्याकरण महाभाष्यञ्च निरमायि पूर्वं, तदनन्तरं तृतीया कृतिरस्य महानुभावस्य आयुर्वेदोद्धाराय प्रावर्तत इति पद्यक्रमेण ज्ञायते युक्तं चैतत् । यदवधि योगक्रिया न स्यात् जीवितस्य जीवनं व्यर्थमेव सम्पद्येत, यदवधि च व्याकरणावगमो न स्यात् कुत्रापि प्रवेशो न स्यात्, इति द्वयादनन्तरमेवायुर्वेद इति एकं मतम् । अथवा—

"आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः"

इति वचनमनु "स्थूलात्सूक्ष्मं प्रपद्यते" इति क्रमेण च पुरतः शरीरशोधनाय आयुर्वेदतन्त्रो, वाक्शोधनाय व्याकरणम्, ततो मनः शोधनाय योगारम्भः इति मतान्तरम्, अत्र चारुत्वाचारुत्वनिर्णये विद्वांसः प्रमाणम् । परमत्र मनागपि शंका नास्ति यदयं महानुभावोऽतिपरोपकारी । तथा च चिकित्सास्थाने—

१—प्रामादिकमेतत् । कृष्णात्रेयः शालाक्यतन्त्रकारः, चरकाद्भिन्नः—इति नेत्ररोगनिदाने—"तेषामभिव्यक्तिरभिप्रदिष्टा शालाक्यतंत्रेषु चिकित्सितं च । पराधिकारे न तु विस्तरोक्तिः शस्तेति तेनात्र न नः प्रयासः ॥" इति लिखंश्चरक एव स्वयमुररीकरोति भेदम् । (सं०)

२—एतन्नाम्ना तद्वंशजाः सर्वेऽपि जनकाः, परं श्रीरामश्वसुरजनकः आयुर्वेदाचार्य इति न प्रतिपद्यते, प्रमाणाभावात् । (सं०)

३—एष श्लोकस्तु योगवार्त्तिके भिक्षुणा समुद्धृतः, परं बहून्येतत्सूचिपादकानि प्रमाणानि वरी वर्तन्ते । (सं०)

"परो भूतदया धर्म इतिमत्वा चिकित्सया।
वर्तते यः स सिद्धार्थः सर्वानेवातिवर्तते ॥"

अथायं कुत्रत्य इति शंकायामुच्यते—

"गोनर्दीयस्त्वाह" इति वाक्यस्य महाभाष्ये बहुशो दृश्यमानत्वात् अयं महानुभावः गोनर्ददेशे (गोंडा प्रान्ते) समजनीति गम्यते, परन्तु विद्याभ्यासानन्तरं सकललोकहिताय परितश्चरणात् "चरक" इति संज्ञां लब्धवान् ॥

सर्वविद्याविशारदतया सकललोकहितैषितया च "पतन्त्योऽञ्जलयः प्रणामकरणाय यस्मिन्" इत्यन्वर्थं संज्ञान्तरं "पतञ्जलिः" इत्यपि प्राप्नोत्। एवं श्रीचरकाचार्य्यस्य देशकालयोर्नामपाण्डित्ययोश्च निर्णीतयोः, को नाम सुश्रुतः कुत्रत्यः किं कालीनः कस्य शिष्यः इति यथाकथमपि वक्तुमुत्सह्यते।

महोदयाः!

"धन्वन्तरिर्धर्मभृतां वरिष्ठो राजर्षिरिन्द्रप्रतिमो बभूव।
... ... शिष्यं शुभं सुश्रुतमन्वशात्सः ॥"

इति निदानस्थाने सुश्रुतोक्तेः—धन्वन्तरिरस्य महानुभावस्य गुरुरिति गम्यते।

अयं च धन्वन्तरिश्चरकसमकालीन इति चरकसंहितातो निश्चीयते, तथा च शारीरस्थाने चरकः—

"सर्वाङ्गनिर्वृत्तिर्युगपदिति धन्वन्तरिः"

इति लिखितवान्—तस्माज्ज्ञायते यदयं "धन्वन्तरिः काशिपतिः दिवोदासः वार्योविदः" इति विविधैः संकेतैः संबोध्यते।

नन्वस्तु चरकाद्धन्वन्तरिः पुराण इति चेन्न। सूत्रस्थाने चरकेण-

"श्रीमान् वार्योविदश्चैव राजा मतिमतां वरः।
निमिश्च राजा वैदेहः आत्रेयो भद्रकाप्यकः ॥"

इति एकस्यां भिषक्सम्मेलनकारिण्यां सभायां चरक-विदेहराज-काशिराजानां स्थितिदर्शनात् चरक-जनक-धन्वन्तरयः समकालीना एवेति नात्र संदेहः, एतेन "आयुर्वेदोद्धारार्थं महर्षयः एकत्रीभूय परिषदश्चक्रिरे" इत्यपि गम्यते।

किञ्च चरकसुश्रुतौ उभावपि त्रेतायां प्रादुरभूताम् इति इतिहासेन पोष्यते । एतेन "द्वापरे सुश्रुतः प्रोक्तः" इति अपास्तम् अथ किं निमित्तं चरकसंहिता अग्निवेशकृतापि चरकनाम्ना प्रख्याता सुश्रुतसंहिता च धन्वन्तरिणोपदिष्टापि 'तच्छिष्यनाम्ना प्रख्याता इति विषये किञ्चिदुच्यते—पुरा किल शिष्याणां चेतसि सुगुरूणां कियानादर आसीत् इति निदर्शनं चरकसंहिता, यत्र गुरुणोपदिष्टस्यायुर्वेदस्य तन्नाम्नैव प्रख्यातिः न तु शिष्यनाम्ना, अतः परं का गुरुभक्तिः स्यात् । अतएव तदानींतनानां जनानां विद्या सफलीबभूव, ओषधयश्च तत्कालफलदायिन्य आसन्। अद्यत्वे पुनः शिष्याः गुरूणामुपदेशमकिञ्चित्करं मन्वानाः प्रायशश्च गुरूम् निजनवकरान् वदन्ति, कुतो विद्या सफलीभवेत् ।"

उक्तञ्च भगवता यास्केन निरुक्ते—

"विद्याह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेहमस्मि ।
असूयकायानृजवेऽयताय न मा ब्रूयाः वीर्यवती तथा स्याम् ॥"

"अध्यापिता ये गुरूनाद्रियन्ते विप्रा वाचा मनसा कर्मणा वा ।
यथैव ते न गुरोर्भोजनीयास्तथैव तान्न भुनक्ति श्रुतं तत् ॥
यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्य्योपपन्नम् ।
यस्ते न द्रुह्येत् कतमश्च नाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन् ।"

निरुक्ते इति अग्निवेशस्य (?) गुरुभक्तेर्निदर्शनं नाम तत्कृतग्रन्थस्य गुरूनाम्ना प्रख्यापनम् । यत्तु धन्वन्तरिणोपदिष्टो ग्रन्थः शिष्यनाम्ना प्रख्यातः, तत्र धर्मशास्त्रं तथैव प्रयोजयति। अयं च खलु धर्मशास्त्रिणां नियमः। यदि कालक्रमेण विद्यावान् ब्राह्मणो न लभ्येत तर्हि क्षत्रियाद्वैश्याद्वा ब्राह्मणस्तां विद्यां पठितुमर्हतीति ध्यायं ध्यायं सुश्रुतादिभिर्ब्रह्मर्षिपुत्रैः काशिराजस्य शिष्यत्वमूरीकृतम् । अतएव धन्वन्तरिरपि धर्मशास्त्रवचांसि स्मारं स्मारं सुश्रुतकृतान् ग्रन्थान् निजनाम्ना न प्रचारयत् "एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः" इति धर्मशास्त्रस्य प्रयोजकत्वात् । तथापि सुश्रुतो निजगुरवे मानदानार्थम्—

"धन्वन्तरिर्धर्मभृतां वरिष्ठो राजर्षिरिन्द्रप्रतिमो बभूव ।
ब्रह्मर्षिपुत्रं विनयोपपन्नं शिष्यं शुभं सुश्रुतमन्वशात्सः ॥"

इति व्यक्ताक्षरैस्तन्नाम बहुशो लिखितवान् । अयमेव हेतुः तत्तन्नाम्ना ग्रन्थप्रचारस्येति मे मन्दा मतिः—अतः परं विद्वांसः प्रमाणम् । अथ को नाम श्रीवाग्भटः इति विषये केवलं तत्पितृनाम तन्नाम चेति द्वयमेव वक्तुं शक्यते, विशेषवचसां तद्ग्रंथे असत्त्वात् । इदन्तु तद्ग्रंथनशैलीतः कथितुं शक्यते यदयं महोदयोऽतीव अर्वाचीनः केवलं चरकसुश्रुतग्रन्थानां लाघवकारको नत्वपूर्वकौशलस्याविर्भावकः । तदुक्तम्—

"तेभ्योऽतिविप्रकीर्णेभ्यः प्रायः सारतरोच्चयः ।

क्रियतेऽष्टांगहृदयं नातिसंक्षेपविस्तरम् ॥"

समाचार।

कलकत्तेके निबन्ध—कानपुरके वैद्यसम्मेलनमें पढ़नेके लिये जो बिबन्ध आये थे वे वैद्यसम्मेलन-पत्रिकामें बराबर छप रहे हैं। मथुराके वैद्यसम्मेलनमें जो निबन्ध आये थे वे अनेक बार मांगने पर भी मथुरावालोंसे नहीं मिले। कलकत्तेके सम्मेलनके समयके कुछ निबन्ध वहांके मन्त्री द्वारा हमें मिले हैं। शेष वहांके भी नहीं मिले। इसलिये मथुरा और कलकत्तेके सम्मेलनके समय जिन्होंने निबन्ध लिखे थे उनसे हमारा निवेदन है कि यदि उनके पास अपने अपने निबन्धकी प्रति हो तो वे लोग उसे शीघ्र इस कार्यालयमें भेज दें; जिससे वे भी प्रकाशित कर दिये जावें। कलकत्तेके सम्मेलनके निम्नलिखित सज्जनोंके निबन्ध हमें मिल चुके हैं। १ पं० नारायणदत्त शर्मा हरिद्वार २ पं० रामचन्द्र शर्मा अलीगढ़ ३ पं० ब्रह्मदेवनारायण मिश्र आरा ४ पं० गणेश त्र्यम्बक जोशी ५ पं० रामानुजस्वामी लमूड़ी श्रीरामतीर्थम् ६ पं० महेशराम जोशी पुराणिक देउलपाड़ा रत्नागिरी।

मद्रास-प्रदर्शिनीकी सूचना—मद्रासकी आयुर्वैदिक प्रदर्शिनीमें जिन वैद्योंने अपनी अपनी वस्तुएं भेजी थीं उनका विचार हो चुका। जिन्हें प्रशंसापत्र आदि मिलना निश्चय हुआ है, उन्हें स्वागतकारिणी सभा भेजेगी। स्वागतकारिणी सभाकी सूचनाके अनुसार जिन सज्जनोंने अपनी वस्तुओंके लौटानेका खर्च भेज दिया है अथवा स्वयं जाकर ले आये हैं या अपना आदमी भेजकर मँगवायी हैं, उनकी वस्तुएं भेज दी गयी हैं अथवा दे दी गयी हैं। जिन सज्जनोंने इनमेंसे एक भी मार्गका अनुसरण नहीं किया, उनकी वस्तुएं मद्रासमें ही पड़ी हुई हैं। विशेषकर निम्नलिखित सज्जनोंको स्वागतकारिणी सभा सूचित करती है कि वस्तुओंके भेजनेका खर्च भेजकर वे अपनी वस्तुएं मँगा लें। यदि जुलाई मासके अन्त तक वे खर्च भेजकर अपनी वस्तुएं नहीं मंगा लेंगे तो स्वागतकारिणी सभा अपने नियमके अनुसार उन वस्तुओंको निकाल डालेगी और फिर ऐसे सज्जनोंकी कोई शिकायत सुनी नहीं जायगी।

१ सी० लल्लूभाई शाहजी, दिनमोनला, दिबोई, बरोदा २ नीलकण्ठ वैद्य पेरुनन्द व्युइलो ३ पी० मिश्र विजयनगरम् ४ कालेश्वर कुटी आश्रम, बद्रीनाथ, गढ़वाल ५ पी० शानमूगा गुरुकल, चेन्दूरा वैद्य, वेद्दुकुल्लाई, सीलोन ६ वैद्य जगन्नाथराय समिथा गुनगुनाता ७ टी० जे० मैस्त्री, गिरगांव, बम्बई ८ बालमुकुन्दजी गोपीनाथ शर्मा राजवैद्य, रतलाम ९ पं० सी० एस० श्रीनिवास चालूं, फिजीशियन, बिल्लूपुरम् १० पं० शिवप्रसाद चौधरी, भागेश्वर, अलमोड़ा, ११ नन्दलाल रामलाल शाह, जोशीमठ, गढ़वाल १२ हरिशङ्करलाल रायशङ्करलाल नेपाली मुष्कडिलर बनारस १३ वैद्य मोहनप्रसाद शर्मा लोहसनमुखी सड़क रतलाम १४ पं० शिवदत्त प्रागजी वैद्य मेयागंज एटा १५ एम० एन० शास्त्री, कमलापुरम्, कड़पा १६ पं० कार्तिकनाथ पाठक भागलपुर १७ देवीप्रसाद सुन्दरलाल कन्नौज सिटी १८ शङ्कर भारती स्वामी कोइलपट्टी १९ भुल्लूर पिचैया गारू पट्टा, गुंटूर २० पुवाडू व्यंकट रामाना मूर्ती मद्रास २१ ए० एन० राघव शर्मा अमृतलूर गुंटूर।

पं० सुदर्शनाचार्य बी० ए० ने कटरा प्रयागके 'सुदर्शन प्रेस' में मुद्रित किया और जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्यने प्रयागके दारागंजसे प्रकाशित किया।

४—ज्वालाग्राही वस्तु तथा सड़ने और बिगड़नेवाली वस्तुएं तब तक न ली जायँगी जब तक उनके सुरक्षित रहनेका प्रबन्ध नहीं कर दिया जायगा।

५—प्रदर्शिनकी व्यवस्था प्रदर्शनसमितिकी ओरसे होगी और प्रदर्शिनीकी सब वस्तुओंपर उसीका अधिकार रहेगा।

६—प्रदर्शनसमितिके व्यवस्थापक प्राप्त वस्तुकी रसीद देंगे और प्रदर्शिनी समाप्त होनेपर रसीद दिखानेपर वे वस्तुएं रजिस्टरमें हस्ताक्षर करा करा कर प्रदर्शकों अथवा उनके गुमाश्ते या प्रतिनिधिको वापस दी जायँगी।

७—प्रदर्शिनीके लिये ज्यों ज्यों वस्तुएं मिलेंगी त्यों त्यों उनका वर्गीकरण किया जायगा और उनपर प्रदर्शिनीका नम्बर लगाया जायगा।

८—प्रदर्शिनीमें दुर्मिल वस्तु भेजनेवालोंको उचित है कि यह भी लिख दें कि वह कहां होती है, कैसी होती और उसका उपयोग क्या है।

९—जो वस्तु रास्तेमें बिगड़ या टूट फूट जाय अथवा किसी आकस्मिक घटनासे बिगड़ जाय उसके लिये प्रदर्शनसमिति उत्तरदाता नहीं है।

१०—वस्तु भेजनेवालोंको उचित है कि वे अपनी वस्तुएं इस प्रकार भेजें कि नवम्बर महीनेके अन्त तक पूने पहुंच जायँ। भेजनेवाले अपना नाम, पता, वस्तुका वर्णन और यदि वह बेचनेकी हो तो उसका मूल्य एक चिटपर लिखकर चिपकाकर भेजना चाहिये।

११—फूल पत्ते और फल आदि शीघ्र बिगड़नेवाली वस्तु इस प्रकार भेजनी चाहिये कि वे प्रदर्शिनी खुलनेके एक दिन पहले व्यवस्थापकको मिल जावें।

१२—प्रदर्शनसमितिको अधिकार है कि किसी वस्तुको बिना कारण बताये भी ग्रहण करना अस्वीकार कर दे।

१३—वस्तु भेजनेवालोंको इन नियमों और इन नियमोंसे जिनका विरोध न हो ऐसे जो नियमोपनियम प्रदर्शनसमिति स्वीकार करे उनके अनुसार बर्ताव करना चाहिये।

१४—जिन वस्तुओंको सुरक्षित रखनेके लिये विशेष सावधानीकी आवश्यकता है, उनके पास प्रदर्शकको प्रदर्शिनी खुलनेसे बन्द होनेके दिन तक स्वयं अथवा अपने किसी मनुष्यको रखना होगा।

१५—प्रत्येक प्रदर्शकको वस्तु भेजनेके प्रार्थनापत्रके साथ एक रुपया फीस भी भेजनी चाहिये।

१६—प्रदर्शिनीकी वस्तुको सुरक्षित रखनेके लिये जो खर्च हो तथा वस्तुओंके भेजने, वापस मँगाने तथा बन्द करने और रेल-स्टेशन तथा पोस्ट आफिसमें पहुंचानेका जो खर्च होगा सब प्रदर्शकके जिम्मे होगा।

१७—सम्मेलनके नियमानुसार प्रदर्शिनीकी वस्तुओंकी जांचके लिये जो परीक्षक समिति बनेगी उसके निर्णयके अनुसार प्रदर्शकोंको यथायोग्य सुवर्ण, रौप्य अथवा कांस्य पदक और प्रशंसापत्र दिये जावेंगे।

१८—प्रदर्शिनी बन्द होनेपर प्रदर्शकोंको तीन दिनके भीतर अपनी वस्तु वापस लेनेका प्रबन्ध करना चाहिये। नहीं तो प्रदर्शन समितिके निर्णयके अनुसार उनकी व्यवस्था की जायगी।

१६—जिन दिनों प्रदर्शिनी खुली रहेगी, उन दिनों प्रदर्शनकी वस्तुओंके विषयमें विशेष व्याख्यान देनेकी व्यवस्था की जायगी।

२०—प्रदर्शिनीकी वस्तुओंको सुरक्षित रखनेके लिये विशेष रक्षक रखे जायँगे।

२१—जब तक प्रदर्शिनीके व्यवस्थापकके पास प्रार्थनापत्र भेजकर स्वतन्त्र आज्ञा न प्राप्त हो तब तक प्रदर्शिनीकी किसी वस्तुका फोटो अथवा किसी शिलालेखकी नकल नहीं लेने दी जायगी।

२२—प्रत्येक प्रदर्शक अथवा उसके प्रतिनिधिको प्रदर्शिनीमें जानेके लिये पास दिया जायगा।

२३—प्रदर्शिनीमें वस्तु रखनेके लिये जो जगह लगेगी वह मुफ्त दी जायगी; परन्तु ऐसी वस्तुएं प्रदर्शनसमितिके निश्चित क्रमके अनुसार रखी जायँगी। प्रदर्शिनीमें वस्तु बेंची जा सकेंगी; परन्तु प्रदर्शिनी बन्द होनेके पहले उन्हें वहांसे उठाने नहीं दिया जायगा। प्रदर्शिनीमें बिकी वस्तुपर तीन रुपये सैकड़े अर्थात् प्रति रुपये आध आना कमीशन प्रदर्शनसमितिको देना पड़ेगा।

२४—प्रदर्शिनीमें रखी हुई वस्तुएं अच्छी तरह देखी जा सकें इसलिये पदर्शिनीकी वस्तुओंकी वर्णनात्मकपुस्तक प्रदर्शिनीके व्यवस्थापकके पास वैद्यसम्मेलन कार्यालयमें अथवा टिकट मिलनेकी जगह मिलेगी।

२५—बारह वर्षसे अधिक उमरके दर्शक (प्रदर्शिनी देखनेको जाने वाले) को प्रति बार दो आनेका और १२ वर्षसे कम उमरके बच्चोंको प्रति बार एक आनेका टिकट लेना होगा।

२६—प्रदर्शिनी सम्बन्धी सम्पूर्ण पत्र व्यवहार इस पते पर करना चाहिये—"व्यवस्थापक अष्टम वैद्यसम्मेलन आयुर्वेदीय प्रदर्शन ५८८ सदाशिवपेठ पूना।"